ISSN 2454-8596
www.MyVedant.com

An International Multidisciplinary Research E-Journal

ग्रामीण संस्कृति बोध से प्रभावित समकालीन हिन्दी कविता

डॉ. उत्तम राजाराम आळतेकर
प्रा. संभाजीराव कदम कॉलेज देऊर,
तहसील–कोरेगाव
जिला–सातारा (महाराष्ट्र)

ISSN 2454-8596
www.MyVedant.com
An International Multidisciplinary Research E-Journal

वर्तमान हिंदी कविता का दायरा बहुत ही विशाल है। कविता की विशालता की तुलना में कवियों की संख्या भी कुछ कम नहीं है। समाज को उन्नतिशील बनाने में कवियों की भूमिका भी उतनीही महत्त्वपूर्ण रही है। कवि, सारे समाज को एक नई दृष्टि के साथ सोचने, समझने तथा उस विचार दृष्टि के अनुरूप व्यवहार करने को प्रवृत्त करता है। इसी दृष्टि में समकालीनता एक जीवन दृष्टि बनकर अपने समय का आकलन कराती है। समकालीनता से उभरी विचारधारा ही समकालीन कविता में तर्क और संवेदना की सम्मिलित भूमि पर उतरी है। समकालीन कविता में कवि ने नई दृष्टि और समाज की अकुलाहट को स्थानदिया है। या यह भी कह सकते है कि, समकालीन कवि ने समय के साथ आँख मिलाकर वास्तवता का चित्रण किया है जिसमें ग्रामीण संस्कृति बोध का चित्रण बडी ही सहजता के साथ हुआ है।

ग्रामीण वतावरण में ही भारतीय संस्कृति बोधकी झलक वास्तवता के साथ उभरती है। ग्रामीण संस्कृतिबोध की दृष्टि से अगर कविता की ओर देखे तो प्राचीन काल की कविता में ग्रामीण संस्कृति के प्रति उपेक्षा भाव रहा है। साथ ही आज की आधुनिक काल की कविता को इस दृष्टिकोन से अछुती नहीं है। आधुनिक काल की कविता को देखते हुए यह भी कह सकते है कि इस काल की कविताओं में यह उपेक्षा का भाव अधिक गहरा ही हुआ है। ग्रामीण संस्कृति तथा शहरी संस्कृति के प्रति उपेक्षा तथा खीझ का भाव आज यथावत हुआ है। ग्रामीण तथा शहरी सभ्यता, संस्कृति अपने–अपने समाज और संस्कृति के श्रेष्ठत्व से चिपके हुए है। इसके अलावा जहाँ तक ग्रामीण संस्कृति की बात की जाए तो यह ग्रामीण संस्कृति ग्रामीण जीवन को मानवीय सरोकारों से जुडती है और ग्रामीण जीवन को व्यापक अर्थ प्रदान करती है।

समकालीन कविता को ग्रामीण संस्कृति की दृष्टि से देखे तो समकालीन कविता संदर्भानुकूल शब्द चयन काव्य की सर्जन क्षमता आदि को काफी प्रभावित करती है। ग्रामीण संस्कृति बोध को प्रस्तुत करने के साथ–साथ समकालीन कविता ने अपनी जमीन अपनी जडों का पहचानने का काम किया है। समकालीन कविता की और एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि इस कविता ने ग्रामीण संस्कृति की परम्परा को परिभाषित करने का काम किया है। इसका सबसे प्रभावि रूप केदारनाथसिंह का कविता संग्रह 'अकाल में सारस' की कविता 'अकाल में सारस' में ग्रामीण संस्कृति और ग्रामीण परिवेश के प्रस्तुत हुआ है–

ISSN 2454-8596
www.MyVedant.com
An International Multidisciplinary Research E-Journal

''तीन बजे दिन में
आगये वे
जब वे आये
किसी ने सोचा तक नहीं था
कि ऐसे भी आ सकते है सारस
अचानक
एक बुढिया ने उन्हें देखा
जरूर जरूर
वे पानी की तलाश में आए हैं
उसने सोचा
वह रसोई में गयी
और आँगन के बीचोबीच
एक जल भरा कटोरा''

केदारनाथ सिंह–अकाल में सारस, पृ.72

यहाँ यही कह सकते है कि, केदारनाथ सिंह अपनी कविता में ग्रामांचल संस्कृति का चित्रण करते है। साथ ही ग्रामीण लोगों में स्थित लोक विश्वास, उत्सुकता को प्रस्तुत करते है।

ग्रामीणसंस्कृति परिवेश की गतिविधि को सजीव चित्र बनाकर प्रस्तुत करनेवाले एक प्रभावि कवि है लीलाधर जगूडी। लीलाधर जगूडी समकालीन कविता में ग्रामीण संस्कृति बोध के दृष्टिकोण को श्रेष्ठता की परिधि में सार्थकता के साथ प्रस्तुत करते हुए लिखते है–

''मेरी कथा
फावडा घिस जाने की
सडक टूट जाने की कथा
मेरी कथा
पत्थर के रेत हो जाने की
पेड के
लकडी हो जाने की
कोयले के
आग हो जाने की कथा है।''

लीलाधर जगूडी–इश्वर की अध्यक्षता में पृ.52

ISSN 2454-8596
www.MyVedant.com
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research E-Journal

यहाँ कवि मानते है कि ग्रामीण संस्कृति का मूल स्वरूप सर्वत्र विध्यमान है। इसी ग्रामीण संस्कृति का बोध कराते हुए परिवेशगत विशेषताओं के साथ मार्मिकता चित्रित करते है। जगूडी ग्रामीण संस्कृति का बोध परिवेश तथा समय के साथ चित्रित करते हुए मानते है कि, ग्रामीण संस्कृति बोध में आधुनिकता के कारण परिवर्तन जरूर आया है परंतु उसमें स्थित ग्रामीण संस्कृति की महक जैसे के तैसे महसुस होती है। साथ ही गाँव की क्रिया कलापों का क्रमानुसार वर्गीकरण भी मिलता है।

सफल अभिव्यक्ती ही समकालीन कविता की सच्ची सृजनात्मकता अगर मानी जाए तो इस अभिव्यक्तिका यथार्थ रूप धुमिल की कविता में दिखाई देना है। धुमिल की कविता ग्रामीण संस्कृति का बोध कराने के साथ उसकी वास्तव तस्बीर प्रस्तुत करती है। धूमील अपनी कविता में प्राकृतिक उपकरणों के सहित ग्रामीण संस्कृति का चित्रण करते है। गाँव का सांस्कृतिक चित्रण करते हुए कवि धुमिल अपनी कविता 'मेरा गाँव' कविता में लिखते है–

'' तारों भरा आसमान
और
मरियल खौरहा कुत्ता
सीवान में पडी फसलों की लोथ का
सन्नाटा सूँघता है।
जहाँ तीन–चार पेड आदमी होने का
करिश्मा दिखा रहे हैं
अँधेरे में ऊँघते है घर
जैसे घुपटी मारे हुए मुसहर
ऊँघता है।''

धुमिल–सडक से संसद तक पृ.58

यहाँ धूमिल अपनी कविता में ग्रामीण संस्कृति का बोध कराने के साथ सामाजिक सन्दर्भो का यथार्थ चित्रण करते है।

किसान मजदूर का चित्रण करते हुए कवि नागार्जुन गाँव के परिवेश की सजीवता चित्रित करते है। कवि हर उस प्रक्रिया को चित्रित करता है जो ग्रामीण भारत की संस्कृति का बोध कराती है। पक्षियों की चहचहाट, पक्षीयों की आहट, साग–सब्जियों की महकती खूशबू से ग्रामीण संस्कृति बोध की पहचान होती है। प्रस्तुत परिवेश का चित्रण करते हुए नागार्जुन लिखते है–

फैलाकर टाँग
उठाकर बाँहें
अकडकर खडा है भूस–भरा पुतला
कर रहा है निगरानी
ककडी–तरबूज की
खीरा–खरबूज की
सो रहा होगा अपांहिज मालिक घर में निश्चिन्त हो
खेत के नगीच
कोई मत आना
हाथ मत लगाना।
प्राण जो प्रिय है तो
भूस का पुतला खाँस रहा खोड–खोड–खोड''

नागार्जुन–युगधारा पृ.93

यहाँ नागार्जुन अपनी कविता में सामान्य जीवन के साथ समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते है।

निलय उपाध्याय की कविताओं में ग्रामीण संस्कार बोध कूट–कूट कर भरा मिलता है। उपाध्याय की कविता 'मकई के खेत में :कुछ चित्र' में बादल के आने से लेकर, वर्षा की बूँदों के साथ, मकई के नवजात पौधों के उगने और उगकर हाथी के बच्चों की तरह सूँड उठाए, गुँफे खोलकर स्वागत में खडे होने का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करते है–

चेहरेपर
मूँछ उग आई हैं
सिर पर मुकुट बाँधे खडे हैं
पौथराज मकई
किसान के जिस्म पर
उतरा गई है खुशी
जैसे सूरज निकला हो चेहरे पर....।''

निलय उपध्याय–अकेला घर हुसैन का, पृ.68

इस प्रकार से समकालीन कविता का प्रमुख आधार जिन्हें मानते है उनमें शमशेर बहाद्दूर से लेकर मुक्तिबोध केदारनाथ अग्रवाल, भारतभूषण अग्रवाल, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय,

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अशोक वाजपेयी चंद्रकात देवताले, मंगलेश डबराल, सुधीर सक्सेना आदि तक के कवियों के कविताओं में ग्रामीण जीवन के महत्त्वपूर्ण सरोकरों से टकराते सवालों के विशेष रूप और गुणधर्मवाली बात परिलक्षित होती हैं। साथ ही गाँव की जो दुनिया ठोस यथार्थ की दुनिया है और जो संस्कार और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है उसको इन कवियों ने अपनी कविता में ग्रामीण संस्कृति बोध के माध्यमसे व्याख्यायित करने के साथ वहाँ की सांस्कृतिक छबी, संस्कारों तथा मूल्यों को प्रभावि रूप से प्रस्तुत किया हैं।